CHARACTER DEVELOPMENT IN DIFFERENT STAGES

चरित्र का अर्थ व परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF CHARACTER)

चरित्र के अर्थ के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं; उदाहरणार्थ **सेमुअल स्माइल** (Samuel Smiles) का विचार है—**"चरित्र, आदतों का पुंज है।"** ("Character is a bundle of habits.") **बाउले** (Bowley) का मत है—**"चरित्र, आत्म-नियंत्रण की शक्ति है।"** ("Character means power of self-control.") **नोवेलिस** (Novalis) का कथन है—**"चरित्र पूर्णतया प्रशिक्षित इच्छा-शक्ति है।"** ("Character is perfectly educated will.") चरित्र की ये सभी परिभाषाएँ अपूर्ण और एकांगी हैं, क्योंकि इनमें से कोई भी चरित्र के अर्थ की पूर्ण व्याख्या नहीं करती है।

चरित्र-निर्माण, शैक्षिक प्रक्रिया का मूल उद्देश्य है। चरित्र-निर्माण में बालक में संकल्प शक्ति का विकास होता है और आदतें स्थायी रूप धारण कर लेती हैं। इन्हीं आदतों का पुंज ही चरित्र कहलाता है।

संकल्प शक्ति (Will) ही चरित्र-निर्माण की नींव की ईंट है। **ड्रेवर** (James Drever) के शब्दों

2. कारमाइकेल—"चरित्र एक गतिशील धारणा है। यह व्यक्ति के दृष्टिकोणों और व्यवहार की विधियों का पूर्ण योग है।"

"Character is a dynamic process. It is the sum total of the attitudes and overt ways of behaving of the individual." —**Charmicael** (p. 783)

3. झा—चरित्र, अर्जित प्रवृत्तियों का पूर्ण योग है। यह एक मानसिक रचना है जो स्थायी और स्थिर रहती है एवं सदैव व्यवहार को प्रभावित करती है।"

"Character is the sum total of acquired disposition, a mental structure which is lasting, enduring and ever influencing conduct." —**Jha** (p. 188)

4. पेक व अन्य—"चरित्र, दृष्टिकोणों और धारणाओं का स्थायी प्रतिमान है, जो नैतिक व्यवहार के प्रकार और प्रकृति की बहुत-कुछ भविष्यवाणी करता है।"

"Character is a persisting pattern of attitudes and motives which produces a rather predictable kind and quality of moral behaviour." —**Peck and Others** (p. 164)

अच्छे चरित्र के लक्षण
(TRAITS OF GOOD CHARACTER)

बाउले एवं अन्य (Bowley and Others) (pp. 177-78) के अनुसार, अच्छे चरित्र में निम्नांकित लक्षण पाये जाते हैं–

1. आत्म-नियंत्रण (Self Control)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति में आत्म-नियंत्रण का गुण होता है। उसे अपने विचारों, व्यवहारों, इच्छाओं, भावनाओं आदि पर अधिकार होता है। वह कठोर परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता है।

2. विश्वसनीयता (Reliability)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति में विश्वसनीयता का गुण होता है और प्रत्येक परिस्थिति में उसका विश्वास किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि वह सदैव किसी आदर्श या सिद्धान्त के अनुसार कार्य करता है। वह किसी सनक या क्षणिक विचार के कारण उससे विचलित नहीं होता है। इसके अतिरिक्त वह एक-सी परिस्थितियों में एक-सा ही व्यवहार करता है। उसके व्यवहार को देखकर उसके परिणाम की भविष्यवाणी की जा सकती है।

3. कार्य में दृढ़ता (Persistence in Action)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति का एक विशेष गुण है–कार्य में दृढ़ता। वह जिस कार्य को आरम्भ करता है, उसे समाप्त अवश्य करता है। वह न तो उसे कभी अधूरा छोड़ता है और न स्थगित करता है।

4. कर्मनिष्ठा (Industry)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति में कर्मनिष्ठा का गुण होता है। वह प्रत्येक कार्य को पूर्ण परिश्रम से करता है। कार्य भले ही नीरस हो, पर वह उसे करने में किसी प्रकार की शिथिलता व्यक्त नहीं करता है।

5. अन्तःकरण की शुद्धता (Conscientiousness)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति का एक मुख्य गुण है–अन्तःकरण की शुद्धता। उसके कर्म, वचन और व्यवहार में छल की छाया भी नहीं होती है।

6. उत्तरदायित्व की भावना (Feeling of Responsibility)—अच्छे चरित्र के व्यक्ति में उत्तर-दायित्व की भावना होती है। वह महान् कष्ट झेलकर भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है।

अन्त में, हम **बाउले व अन्य** के शब्दों में कह सकते हैं–**"चरित्र के ये गुण और लक्षण, विद्यालय-कार्य और सामाजिक जीवन, दोनों में प्रत्यक्ष रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। जिन छात्रों में ये गुण होते हैं, वे अपनी मानसिक शक्तियों का, जो भी उनमें होती हैं, अधिकतम प्रयोग करते हैं।"**

"These character traits and qualities are obviously very important, both in school work and social life. Pupils who show them will make the most use of whatever intellectual powers they happen to possess."
—**Bowley and Others** (p. 178)

चरित्र-निर्माण में शिक्षा का कार्य
(ROLE OF EDUCATION IN CHARACTER FORMATION)

स्किनर व हैरीसन के शब्दों में—"इस बात से कोई प्रयोजन नहीं है कि शिक्षा कहाँ दी जाती है या किस प्रकार दी जाती है। बालक को दी जाने वाली सब शिक्षा को उसके चरित्र-निर्माण में अनिवार्य रूप से योग देना चाहिए।"

"No matter where it is found or how it takes place, all education must be made to contribute to the building of character." —**Skinner Harriman** (p. 261)

शिक्षा को बालक के चरित्र-निर्माण में योग देने के लिए अनेक विधियों को अपनाया जा सकता है; यथा—

1. बालक को नियमित रूप से नैतिक शिक्षा देनी चाहिए।

2. बालक के अच्छे विचारों, इच्छाओं और प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

3. बालक को उत्तम वातावरण में रखकर, उसमें नैतिक गुणों का विकास करना चाहिए।

4. बालक को ऐसे वातावरण में रखना चाहिए, जिसमें उसमें भय, घृणा, क्रोध आदि के समान अवांछनीय स्थायीभाव उत्पन्न न हों।

5. बालक के प्रति प्रेम, दया और सहानुभूति का व्यवहार करके, उसमें इन स्थायीभावों को उत्पन्न करना चाहिए।

6. बालक की मूलप्रवृत्तियों का दमन नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से उसके मस्तिष्क में ग्रन्थियाँ बन जाती हैं। फलस्वरूप, उसमें दुर्गुण और बुरी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

7. बालक की मूलप्रवृत्तियों का शोधन, रूप-परिवर्तन और प्रशिक्षण करके उत्तम संवेगों का निर्माण करना चाहिए।

8. बालक को क्षुद्र स्थायीभावों के ऊपर उठाने के लिए उसमें उत्तम आदर्शों, सद्गुणों और अमूर्त स्थायीभावों का निर्माण करना चाहिए।

9. बालक में अच्छी आदतों का निर्माण करना चाहिए और उसकी इच्छा-शक्ति को दृढ़ बनाने का प्रयास करना चाहिए।

10. बालक के चरित्र का विकास करने के लिए उसके व्यक्तित्व के सब अंगों का विकास करना चाहिए।

11. **स्किनर एवं हैरिमन** (Skinner and Harriman) के अनुसार—बालक के चरित्र का निर्माण एकाकी जीवन व्यतीत करने से नहीं, वरन् दूसरों के सम्पर्क में आने से होता है। अतः विद्यालय में सामाजिक क्रियाओं का आयोजन करके बालक को उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

12. **मैक्डूगल** (McDougall) के अनुसार—आत्म-सम्मान का स्थायीभाव, चरित्र है और नैतिक स्थायीभावों में सर्वश्रेष्ठ है। अतः बालक में इस स्थायीभाव को पूर्ण रूप से विकसित करना चाहिए।

13. **वैलेनटीन** (Valentine) (p. 169) का कथन है—"मनुष्य कुछ स्थायीभावों का जितना अधिक संगठन करता है, उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है।" अतः बालक में अधिक-से-अधिक स्थायीभावों का संगठन करने के लिए अग्रलिखित कार्य किये जाने चाहिए—(1) उच्च आदर्शों और लक्ष्यों के लिए प्रेरणा देना, (2) महान् व्यक्तियों के विचारों और आदर्शों से परिचित कराना, (3) प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, श्रेष्ठ साहित्यकारों आदि की जीवनियाँ सुनाना, (4) कार्य और सिद्धान्त के उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करना, आदि।

यदि विद्यालय उपरिअंकित कार्यों को सम्पन्न नहीं करता है, तो वह बालक के चरित्र का निर्माण करने में कदापि सफल नहीं हो सकता है। अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि विद्यालय की शिक्षा इस प्रकार नियोजित की जाय कि वह बालक के चरित्र का निर्माण करके, उसकी भावी सफलता का मार्ग प्रशस्त करे। **"नेशनल सोसाइटी की ईयरबुक"** में अंकित इस वाक्य में अमर सत्य है—**"विद्यालय को यह चुनौती है कि वह बालक के उपयुक्त प्रशिक्षण के लिए सबसे अधिक उपयोगी परिस्थितियों का निर्माण करे।"**

"The challenge for the school is to create the most congenial conditions for the right training of the child's character."

—**39th Yearbook,** *National Society for the Study of Education, Part I,* p. 277.